IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति के रूप में प्रत्यक्षवाद का उद्भव: विश्लेषण एवं इसके निहितार्थ।

Raghuwar Lal, M.A, M.Ed, Lecturer, Shyam Babu +2 High School Sanyas Ashram, Gaya.

Keshav Chandra, Ph.D Scholar, Japanese Division, Department of East Asian Studies, University Of Delhi .

Emergence of positivism as a social science research method: analysis and its implications.

Abstract- प्रत्यक्षवाद एक ज्ञान का व्यावहारिक मूल्य है और विज्ञान के विकास में मानवजाति के विकास की मान्यता का समर्थन किया जाता है। समाज के पुनर्निर्माण के लिये समाज का एक विज्ञान होना जरूरी है जो तथ्यों पर आधारित हो। प्रत्यक्षवाद के विधि तथ्यों व अवलोकनों द्वारा ही सामाजिक विज्ञान को सत्यापित ज्ञान में बदला जा सकता है। सामाजिक विज्ञान में शोध प्रविधियों के अन्तर्गत अवधारणाओं(Hypothesis) को बाहरी दुनिया का ज्ञान व अनुभव और प्रेक्षणों से सत्यापित अथवा असत्यापित करना चाहिए ताकि उसकी विश्वसनीयता, वैध ज्ञान की खोज की जा सके। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति के रूप में प्रत्यक्षवाद स्वयं को स्थापित करता है जो सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, व्यक्तिवादिता तथा वस्तुनिष्ठता को अत्यधिक महत्व देता है।

Key words- प्रत्यक्षवाद, अगस्त काम्टे, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति, सामाजिक भौतिकी, विज्ञानवाद, अनुभववाद, बुद्धिवाद।

परिचय-

समाज शास्त्र की उत्पत्ति विकास की बौद्धिक परंपरा से हुई है क्योंकि यूरोप के संदर्भ में यूरोप की परिस्थितियों और बौद्धिक चिंतन ने उसे आगे बढ़ाया है। पुनर्जागरण काल के समय डार्बिन व लैमार्क ने विकास के जैविक सिद्धांत (Biological Theories of Evolution) प्रतिपादित कर जैविक विकास की पुरानी मान्यता को निरसित किया और एक वैज्ञानिक चिंतन को आगे बढ़ाया। इसका प्रभाव स्पेंसर (Herbert Spenser) मार्गन (C. H. Morgan) जैसे विद्वानों पर पड़ा। इस क्रम में औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के कारण यूरोपियन समाज एक संक्रांति काल से गुजर रहा था। पुरानी मान्यता, कारण व विचार पर नये सामाजिक नियम के विचार का विकास हो रहा था। इसी परिणाम स्वरूप व्यवस्था की विचारधारा(Ideology of System) का विकास हुआ जो व्यवस्थित समाज की बात करता है।

ज्ञान की दो शाखा प्रथम विचारवादी दृष्टिकोण (Idealistic) है जो मनुष्य के मस्तिष्क व चेतना को प्रमुखता देते हैं वहीं दूसरी शाखा भौतिकवादी (Materialistic) दृष्टिकोण है जो वास्तविक विश्व व उसके यथार्थ को जानने का प्रयत्न करता है। भारत में यद्यपि विचारवादी दृष्टिकोण प्रभावी रहा है और भौतिकवादी कमजोर परन्तु चार्वाक, सांख्य , न्याय, तथा वैशेषिक दृष्टिकोण में भौतिकवादी (Materialistic) का प्रभाव देखा जाता है और अपने ज्ञानमीमांसा(Epistemology) में खोजा जाता है और इसे प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक विधियों का सहारा लिया जाता है। प्लेटो से लेकर तार्किक प्रत्ययवादी ने भी ज्ञानमीमांसा को अत्यधिक महत्व दिया।

18वीं सदी के पूर्वार्ध के यूरोप में व्यापार बढ़ने से उत्पादन बाजार के लिए होने लगा और उत्पादन के नए तरीके विकसित किए जाने लगे। ये कई देशों में आरंभ हुआ, जैसे ब्रिटेन, फ्रांस, नीदरलैंड, इटली, स्पेन, पुर्तगाल इत्यादि। उसी दौरान कॉपरनिकस क्रांति हुई जहाँ सूर्य को केंद्र माना गया। इस ज्ञानोदय में फ्रांसिस बेकन ने ज्ञान के लिए अवलोकन और प्रयोग को महत्व दिया। इसी क्रम में हाब्स, लॉक और बर्कले ने इंद्रियों द्वारा स्थापित ज्ञान को महत्व दिया जिसे अनुभववाद कहा गया। बाद में स्पिनोजा, देकार्त ने बुद्धिवाद को आगे बढ़ाया। इन दोनों के मध्य विवाद उत्पन्न होने पर कांट ने समझौतावादी सिद्धांत देकर ज्ञान में दोनों तत्वों को प्रमुखता प्रदान की। इसी ज्ञान का प्रभाव मैक्स वेबर पर पड़ा।

इस ज्ञान के क्रमिक विकास में प्रत्यक्षवाद(Positivism) का विकास हुआ जो दार्शनिक आंदोलन का प्रतीक बन चुका था। ये विज्ञान और संस्कृति को महत्व देकर अनुभव और व्यवहारिकता को आगे बढ़ाता है। प्रत्यक्षवाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सेंट साइमन द्वारा किया गया। परंतु अगस्त काम्टे ने इसे 19वीं सदी के पूर्वार्ध में प्रचलित किया। इसके बाद इसका विकास पूरे यूरोप और अमेरिका में हुआ।

इस फ्रेंच दार्शनिक के अनुसार 19वीं सदी के आरंभ में ज्ञान अपने विकास के क्रम में 3 अवस्थाओं से गुजरता है- दैवीय या कल्पित अवस्था(THEOLOGICAL), अमूर्त अवस्था (METAPHISICAL))तथा तीसरा- वैज्ञानिक(POSITIVIST) अथवा तथ्य या प्रत्यक्ष अवस्था।

प्रथम अवस्था में पौराणिक कथाओं को प्रमुखता प्रदान की जाती है। इसमें प्रकृति के दिव्य गुण व प्रकृति तथा प्राणी को देखकर करते हैं। दूसरी अवस्था में अमूर्त्त विषयों पर ज्ञान का चिंतन किया जाता है और ये यूरोप में आध्यात्मिक चिंतन को बढ़ाया जो प्लेटो व अरस्तु से लेकर सेंट आगस्टीन, सेंट थामस और अंत में स्पिनोजा लाइब्रित्ज, कांट और हेगल तक पहुंचकर आधुनिक युग में प्रवेश किया। काम्टे ने धार्मिक - आध्यात्मिक स्तर पर सभी चीजों को इसके अधीन माना था। दूसरे स्तर पर थोड़ा परिवर्तन के साथ आगे बढ़ा जो संक्रमण भूमिका में स्थापित हुआ और धीरे-धीरे ये वैज्ञानिक स्तर पर जा पहुंचा जो मानव के कारण एक निश्चित प्रक्रिया थी।

अगस्त काम्टे का मानना है कि अगर समाज का पुनर्निर्माण करना है तो समाज का एक विज्ञान होना जरूरी है और वो विज्ञान तभी बन सकता है जब तथ्यों पर आधारित हो। तथ्यों का संकलन विज्ञान में महत्वपूर्ण है। तथ्यों को उनके गुणों के आधार पर विभाजन करना चाहिए और देखना चाहिए कि तथ्यों के एक वर्ग का सह-संबंध किस तरह से दूसरे वर्ग से संबंध रखता है। इस तरह से विभिन्न वर्गों के बीच कारण-कार्य का संबंध बनेगा और एक सामान्य निष्कर्ष को खोजा जाएगा। ये प्रक्रिया तथ्यों का संकलन, अवलोकन, प्रयोग द्वारा किया जाएगा। प्राकृतिक विज्ञानों की कार्यविधि भी यही है।

सामाजिक विज्ञान के दर्शन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। पहला- सामाजिक विज्ञान को एक तार्किकता में बदलना जो दार्शनिक मान्यताओं को सामाजिक रूप से जांचने का अभ्यास, प्राकृतिक विज्ञान के दर्शन को वैज्ञानिक रूप से जांच करने व सत्तामूलक मान्यताओं (Metaphysics) के सच को सामने लाने से है।

दूसरा, सामाजिक विज्ञान के दर्शनों की व्याख्या, हमारी समझ में सुधार व उसकी आलोचना करने के संदर्भ से है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान, वर्णनात्मक व निर्देशात्मक रूप में बदल जाता है। इस प्रकार ये कई प्रश्नों से एक दूसरे से जुड़ जाते हैं। जैसे सामाजिक विज्ञान की विधि क्या है, प्राकृतिक विज्ञान के एक रूप में एक ही तरीके का प्रयोग करता है, यदि नहीं तो इसे करना चाहिए या नहीं। मौलिक प्राकृतिक विज्ञान अलग सामाजिक विज्ञान को वैज्ञानिक प्रत्यक्षण करना चाहिए। क्या सामाजिक विज्ञान का वैज्ञानिक प्रत्यक्षण हो सकता है? सामाजिक विज्ञान में उत्पादन किस प्रकार होता है? सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य और मूल्य निरपेक्ष हो सकते हैं या उन्हें होने का प्रयत्न करना चाहिए? क्या सामाजिक विज्ञान को अपना गुण व नियमों के साथ जांच करने के लिये अपनी विधि को विकास करना चाहिए या नियमितिकरण और सामाजिक दुनिया के अन्य गुणों के बारे में तथ्यों को अल्प किया जाना चाहिए इत्यादि। इन प्रश्नों या शोधों द्वारा सामाजिक विज्ञान को तथ्यों व अवलोकनों द्वारा उसे सत्यापित ज्ञान में बदला जा सकता है।

17वीं सदी की वैज्ञानिक क्रांति के कारण प्राकृतिक विज्ञान की उपलब्धियां सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहीं। प्रकृति की उनकी प्रत्यक्षण सुरुचिपूर्ण शक्तिशाली सिद्धांतों ने न केवल उसकी वृद्धि की बल्कि प्राकृतिक दुनिया की समझ और मानव शक्ति व नियंत्रण में भी विकास किया। उदाहरण- भौतिक विज्ञान में ब्रह्मांड की उत्पत्ति और सूर्य की ऊर्जा का स्रोत के रूप में उसके रहस्यों का उजागर किया गया और कंप्यूटर, परमाणु ऊर्जा व अंतरिक्ष की खोज के लिए प्रेरित किया। प्राकृतिक विज्ञान लंबे समय तक अपने सिद्धांतों की गहराई, सीमा और भविष्यवाणी करने की क्षमता में वृद्धि करने में प्रयासरत हैं और अधिक स्पष्ट रूप में ये प्रगतिशील भी है। इन सबों में आम सहमति है। इसी वजह से विज्ञान के उद्देश्य व उसको संचालित करने के नियमों में प्राकृतिक वैज्ञानिकों के बीच तारतम्य नहीं बन पाता।

कई दार्शनिक और सामाजिक सिद्धांतों ने सामाजिक दुनिया के अध्ययन में प्राकृतिक विज्ञान के विधियों को ग्रहण करने के लिए प्राकृतिक विज्ञान की विधियों को प्रेरित किया। ये सामाजिक विज्ञान में भी प्राकृतिक की तरह व्याख्यात्मक भविष्यवाणी करने की क्षमता से थे और इस प्रकार के खोजों के द्वारा समाज में हिंसा, असमानताओं इत्यादि सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इसका पूर्वानुमान निकाला जा सकता है। इससे समाज के विभिन्न संस्थानों के प्रदर्शन और मानव भलाई में सुधार होगा। दार्शनिकों का मानना है कि सामाजिक प्रेक्षण करने के लिए लक्ष्य और प्राकृतिक विज्ञान के तरीके को अपनाकर वैज्ञानिक पद्धति के साथ उसके सम्बंधों में एकता स्थापित कर सकते हैं।

इस प्रत्यक्षवाद के सामाजिक लक्ष्य और विज्ञान के विधि में कुछ समझौतों द्वारा सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान को एकजुट करने का प्रयास किया गया और इसका विकास अनुभववाद के दर्शनों में खोजा जा सकता है जो जॉन लॉक, बर्कले व ह्यूम में पाया गया है। संक्षेप में कहें तो अनुभववाद मानता है कि सामाजिक विज्ञान में शोध बाहरी दुनिया का ज्ञान, अनुभव और प्रेक्षणों पर आधारित होना चाहिए। इन्हीं आधारों पर अवधारणाओं(Hypothesis) को सत्यापित अथवा असत्यापित करना चाहिए।

अगस्त काम्टे ने तर्क दिया है कि सभी सिद्धांतों, अवधारणाओं(Hypothesis) या संस्थाओं में अनुभव के ज्ञान को सत्यापित कर सकते हैं और उसे वैज्ञानिक स्पष्टीकरण से स्पष्ट करनी चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि वैज्ञानिक व्याख्या का उद्देश्य भविष्यवाणी है जो हमारी इंद्रियों से परे व अज्ञात है उसे समझने के लिए वैज्ञानिक पद्धति एक प्रमुख साधन है। वे न्यूटन के गति के नियमों का उदाहरण देते हुए प्राकृतिक घटनाओं के नियंत्रण करने वाली शक्तियों को उजागर किया है जो मानवीय इंद्रियों से परे व अज्ञात थीं। काम्टे ने वैज्ञानिक पद्धति की वकालत करते हुए कहा कि प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान दोनों में प्रत्यक्षवाद ने सामाजिक भौतिकवाद की स्थापना करने का प्रयास किया है और प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से परीक्षण कर उसे स्थापित करने का भी प्रयास किया है।

एक दार्शनिक आंदोलन के रूप में प्रत्य़क्षवाद ने वैज्ञानिक पद्धति की एकता का अभ्यास जारी रखा। किंतु विज्ञान की समुचित विधियों के बारे में प्रकृतिवादियों के मध्य कुछ असहमतियां हैं और तीन सिद्धांतों के द्वारा प्रत्य़क्षवाद के अस्तित्व की जड़ों का पता लगाया जा सकता है।

1. प्रकृतिवाद के मान्यताकारों का मानना है कि विज्ञान एक मौलिक तथा अनुभवजन्य अभ्यास है
2. प्रकृतिवादियों का मानना है कि विज्ञान का मौलिक उद्देश्य उत्पादन के कारण का एक सामान्य नियमों का स्पष्टीकरण देना है।
3. प्रकृतिवादियों ने तटस्थता को महत्व दिया है। दुनिया को समझने के लिए निरपेक्ष/तटस्थता की आवश्यकता पर बल दिया न कि हमारी अपनी भावनाओं पर।

प्रत्यक्षवाद एक सोच के द्वारा सामाजिक जीवन की कार्यप्रणाली, उसकी विश्वसनीयता, वैध ज्ञान की खोज करने पर आधारित है और इस ज्ञान की मदद से सामाजिक परिवर्तन को मानवीय हालात में सुधार के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रत्यक्षवाद तर्क देता है कि सामाजिक ज्ञान प्रत्यक्ष इंद्रियों के अवलोकन से सम्बंधित होना चाहिए और सामाजिक जीवन कठोर रेखीय और व्यवस्थित अवलोकित तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। किंतु समकालीन समाजशास्त्र में इसका प्रभाव कम है।

काम्टे ने यह तर्क भी दिया है कि समाजशास्त्र 'सामाजिक भौतिकी' बन सकता है अर्थात विज्ञान के सकारात्मक पक्ष भौतिक विज्ञान के समतुल्य इसका निर्माण हो सकता है और काम्टे का यह भी मानना था कि समाजशास्त्र अंत में पदानुक्रम में उच्च स्थान पर पहुंच जाएगा। काम्टे ने समाजशास्त्र की चार विधियों की पहचान की जो समाजशास्त्र की शोध प्रविधियों(Research Methodology) में काफी महत्वपूर्ण है।

1 अवलोकन(Observation),
2 प्रयोग (Experiment)
3 तुलना(comparison)
4 ऐतिहासिक शोध(Historical Research)

काम्टे के विचारों में विकासवाद की सोच में उसके ऐतिहासिक समांतर के द्वारा तीन बौद्धिक विकासक्रम का विकास हुआ।

1- धार्मिक चरण, जहां प्राकृतिक घटना को दिव्य शक्ति के रूप में देखा गया।

2- आध्यात्मिक चरण, जिसमें बुद्धि द्वारा तत्वमीमांसा की विवेचना की गई।

3- सकारात्मक चरण, जिसमें स्पष्टीकरण की आवश्यकता पर बल दिया जाता है और जो सामान्यीकरण व सकारात्मक तथ्यों की नींव पर आधारित है।

इसी चरण में प्रत्यक्षवाद का आधार बनता है और वैज्ञानिक तथ्यों व कारणों द्वारा तत्त्वमीमांसा को अस्वीकृत किया जाता है।

इस प्रकार प्रत्यक्षवाद ज्ञान के एक व्यावहारिक मूल्य को आगे बढ़ाया और विज्ञान के विकास में मानवजाति के विकास की मान्यता का समर्थन किया। मनुष्य करने के लिए अनुभव कर सकता है जो उसका विशिष्ट गुण है क्योंकि सभी विज्ञान प्राकृतिक नियमों के एकल नियमों से प्रादुर्भाव हुआ था।

यह प्रगतिवाद के पथ पर थी क्योंकि सामाजिक स्थिरता वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित था जिसको एक नैतिक व्यवस्था में स्थापित किया जा सकता था। धर्म जो रहस्यपूर्ण नियमों पर आधारित था, को खारिज कर व्यावहारिक मूल्य जोकि विज्ञान के आधार पर टिका है उसको समाजशास्त्र में स्थापित कर एक सामान्यीकरण व स्पष्टीकरण के आधार पर सामाजिक नियमों को बनाकर मानवीय समस्याओं के समाधान को ढुँढने का उद्देश्य थ।।

दुर्खीम ने प्रत्यक्षवाद को कठोर यथार्थवाद के निकट पहुंचा दिया। उनका मानना है कि तथ्यों के साथ छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए, तथ्य जैसा भी हो उसे उसी रूप में रखना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि तथ्यों का उसके सामाजिक जीवन में क्या स्थान है। अगर विवाह एक तथ्य है तो समाज के संगठन को बनाए रखने में उस तथ्य का क्या योगदान है। इस योगदान को समझना ही प्रत्यक्षवाद है जो काम्टे के प्रत्यक्षवाद से भिन्न है।

दुर्खीम से लेकर पारसंस तक प्रत्यक्षवाद का यही क्रम चलता रहा, तथ्य को एकत्रित करना और व्यवस्था में तथ्यों का योगदान/स्थान देखना ही प्रत्यक्षवादी अवधारणा बन गया है। दुर्खीम से प्रभावित होकर रैडक्लिफ ब्राउन और मैलिनाव्सकी ने प्रत्यक्षवाद को एक व्यवस्थित विधि में बदल दिया जो प्रकार्यवाद कहलाया। जिसके अंतर्गत माना गया कि सभी मनुष्य आवश्यकता और शारीरिक बनावट में समान हैं परंतु सांस्कृतिक भिन्नताओं की वजह से उनमें अंतर आ जाता है। अत: मनुष्य पर प्रभाव डालने वाले तथ्यों को एक प्रभाव से निश्चित किया गया है। संस्कृति और उनके मान्यताओं को मानवशास्त्रियों ने अपनी सहमति प्रदान की और व्यक्ति में संस्कृति और समाज का प्रक्रियावादी(Functionalist) अध्ययन करना शुरु कर दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत सामाजिक विज्ञान ने उन्नति कर ली और तथ्यों को देखने व समझने की विधियां विकसित की गयी। प्राणिविज्ञान पर प्रत्यक्षवाद का प्रभाव पड़ा और समाजविज्ञान में पुराने प्रत्यक्षवाद को बदलकर नवप्रत्यक्षवाद की स्थापना हुई जिसमें तथ्यों का मापन व मात्रा जो विज्ञान के लिए आवश्यक है। इस मान्यता को समाजविज्ञान में भी संभव बनाया गया। इसके अंतर्गत जो कुछ प्रकट होता है उसी का अध्ययन किया जाता है। क्या होना चाहिए, इस पर अध्ययन करना अवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें तथ्यों का अभाव होता है।

वैज्ञानिक प्रत्यक्षवाद की आलोचना दो प्रकार से की गई है 1 - सामाजिक विज्ञान ऐसी चीजों को मापता है जो मापने योग्य नहीं है। सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु संस्कृतिपरक होती है अत: सामाजिक विज्ञानों को विज्ञान कहना तर्कसंगत नहीं है। 2- वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा मनुष्य की चेतना व बौद्धिकता को सीमित नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति की चेतना व उसकी आत्मा का नियंत्रण सामाजिक विज्ञान द्वारा किया जाता रहा है जो असंभव है। मैक्स वेबर ने सार्थक क्रिया और स्पष्ट क्रिया में अंतर किया है। किसान द्वारा खेती करना सार्थक क्रिया है जबकि पलकें झपकाना सहज क्रिया है और वो सार्थक क्रिया का अध्ययन करते हैं।

प्रत्यक्षवाद तथ्यों में अंतर स्पष्ट नहीं करता है लेकिन नैतिक व आध्यात्मिक तथ्यों और वैज्ञानिक तथ्यों में अंतर होता है। वैज्ञानिक तथ्य निरीक्षण और परीक्षण का परिणाम होते हैं जबकि नैतिक व आध्यात्मिक तथ्यों का अनुभाविक आधार पर सत्यापन नहीं कर सकते हैं। अच्छे कार्य, नैतिक कार्य, अच्छे व बुरे कार्यों व कर्मों में अंतर स्पष्ट करना, भूख लगना, बीमार होना, त्याग, भावना, सुख, दुख इत्यादि का अनुभाविक आधार पर परीक्षण उसकी सत्यता की पुष्टि नहीं की जा सकती है। वैज्ञानिक तथ्य वस्तुपरक होते हैं।

इस प्रकार पाते हैं कि प्रत्यक्षवाद ने समाजशास्त्र के अध्ययन व शोध को अधिक वैज्ञानिक तथा तथ्यपरक बनाया। जिससे अंधविश्वास तथा पूर्वाग्रहों को दूर किया गया तथा मानवीय सभ्यता के विकास में आने वाली समस्याओं के समाधान का प्रयास किया गया। मानव के सामाजिक जीवन को व्यवस्थित व संस्थानीकरण कर उसे अधिक उन्नत करने का प्रयास किया गया तथा आधुनिक मानव के रूप में बढ़ने के लिए एक प्रेरक बल की तरह कार्य किया जो सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, व्यक्तिवादिता तथा वस्तुनिष्ठता को अत्यधिक महत्व देता है।

REFERENCE:-

Alam, Manis(1978), "Critique of positivism in Nature science", Social Scientist, Vol-6,No-5,pp-67-78.

Baldus, Bernd(1990), "Positivism's Twilight", The Canadian Journal of Sociology,vol-15,No-2,pp-149-163.

Bertea, Stefano(2007), " A Critique of inclusive Positivism, Archives for philosophy of law and social philosophy,vol-93,No-1,pp-67-81.

Berkenkotter,Carol(1989), "The Legacy of positivism inempirical composition Researh", Jouranal of Advanced composition,Vol-9,No-1,pp-69-82.

Fiss,Owenm(1992), "The Varieties of Positivism", The Yale Law of Journal, Vol-90,No-5, PP-1007-1016.

Hartung,E Frank(!944), "The Sociology of Positivism", Science and Society,Vol-8,No-4,pp-328-341.

Heidtman,Joanna, et al(2000), "Positivism and Types of theories in Sociology", Sociologyical Focus, Vol-33,No-1

Gorton.William A, " The Philosphy of Social Science [online web] URL-http//www.lep.utm.edu/sos-sci.

Lenski, Gerhard(1991), "Positivism's future :And Sociology", The Canadian Journal of Sociology, Vol-16,No-2,PP-187-195.

Maheshwari,Dr.V.K(2013), "Auguste Comtes "Theory of Positivism[online web]-URL-http//www.vkmaheshashwari.com

Marsonet,Michele(2002), "Positivism" [online web] URL-http://www.inter.org

Stace,W.T(1944), "Positivism" , MIND, Vol-53,No-211,PP-215-237

Sebok,Anthony(1995), "Misunderstanding Positivism", Michigan Law Review,Vol-93,No-7,PP-2054-2132.

सिंह जे पी(2013), "समाजशास्त्र अवधारणा एवं सिद्धांत "new delhi, PHI Publishing Limited.

पाण्डेय एम एस(2011), "समाजशास्त्र" New Delhi, TMH.

लाल बी के प्रो (2001) "समकालीन पाश्चात्य दर्शन" Patna, MotiLal Banarashidas.

शर्मा चन्द्रधर (1998) "पाश्चात्य दर्शन" Patna, MotiLal Banarashidas.